International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor (RJIF 5.72)
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 2; February 2016; Page No. 421-422

मृणाल पाण्डे के उपन्यासें में आंचलिकता

बिरमती

Department of Hindi, Distance Learning, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India

सारांश
आंचलिक उपन्यास एक विषिष्ट अंचल के लोगों, वहां की जलवायु, प्रकृति बात–चीत के ढंग आदि को दर्षादा हैं। मृणाल पाण्डेय के उपन्यास एक अंचल विषेष में समय के बदलाव को दर्षाते है। मृणाल पाण्डय के उपन्यासों के कथानक में भी आंचलिकता की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है। वहां विद्यमान अंध विष्वासों और मान्यताओं को महत्त्व दिया गया है । ये उपन्यास उच्च कोटि के उपन्यासों की श्रेणी में अपना स्थान बनाए हुए हैं।

कूट शब्दः आंचलिक, पररिवेष, अंध विष्वास, मनोवैज्ञानिक, प्रचलन ।

प्रस्तावना
डॉ. धीरेन्द्र वर्मा आंचलिक उपन्यासों की परिभाशा इस प्रकार देते हैं, ''आंचलिक रचनाओं में कोई विषिश्ट अंचल या क्षेत्र या उसका कोई एक भाग व गांव ही प्रतिपाद्य व विवेच्य होता है। आंचलिकता की सिद्ध के लिए स्थानीय दृष्यों, प्रकृति, जलवायु, त्यौहार, लोकगीत, बात–चीत का विषिश्ट ढंग मुहावरे, लोक्तियां, भाशा और उच्चारण की विकृतियां लोगों की स्वभावगत व व्यवहारगत विषेशताएं व उनका रोमांस नैतिक मान्यताएं आदि का समावेष बडी सतर्कता और सावधानी के साथ किया जाना ऊपेक्षित है। ''
डॉ. धीरेन्द्र वर्मा की परिभाशा को आधार बनाकर यदि मृणाल पाण्डे के उपन्यासों का विष्लेशण किया जाए तो वे उच्चकोटि की संवेदनषील लेखिका सिद्ध होती हैं । वे जिस परवेष व परिस्थिति का वर्णन करती है उसे पूर्णतः आत्मसात करती हैं । उन्होंने अपने उपन्यासों को श्रेश्ठ कोटि की उपन्यासों की श्रेणी में खड़ा किया है। उनके द्वारा लिखे गए उपन्यासों मे से कुछ उपन्यासों जैसे –रास्तों पर भटकते हुए, अपनी गवाही हमको दियो परदेस आदि की कथा में से आंचलिकता के कुछ उदाहरण उद्धृत हैं।

'रास्तों पर भटकते हुए' की कथा में आंचलिकता
मृणाल पाण्डे के उपन्यास रास्तों पर भटकते हुए की कथा में आंचलिकता की छटा सर्वत्र विद्मान है। समय के साथ होते बदलाव को दर्षाता हुआ यह गद्यांष दृश्टत्य है –
''सौभाग्यवती गारटड को स्वीकृत करने का प्रस्ताव और छेकां गया तो इकलौता बेटा भी हाथ से जाता रहेगा। बेटे और बहू में से चुनने में वक्त ही कितना लगता है ? पर झूठा क्यों कहूं । विच्छेद की इस छड़ी में डॉक्टर साहब यानी मेरे ष्वसुर ने यह स्पश्ट कर दिया था कि पैसे से जितनी खुषी खरीदी जा सकती है, उसे थमाकर एवज में वे मेरी खोई सद्भावना वापस पाना चाहते हैं।
आजादी के बाद भी लोग गुलाम थे। ''संकटो से भरा हुआ साल था वह छह माह में आम चुनाव होने थे । चालीस के आन्दोलन के कई युवा दिलों की उद्दाम धडकने अब तक खा–खाकर कोलेस्टेरोल की कीचड़ से बूढ़ी षिराओं और थकी हुई पेषियों की गुलाम बन चली थीं।''
यह उपन्यास मनोवैज्ञानिक दृश्टि से औरतों की षोचनीय स्थिति तथा उनके प्रति अपने विचारों और दृश्टिकोण को दर्षाता है।
''औरतों के लिए घर के सामान की फिक्र में उम्र काटना उनकी एक अनिवार्य नियति बन जाता है। मेरे पति की मां हो या भाई की बीवी, उनकी सुबह नौकरों पर झल्लाते हुए षुरू होती थी । वे खुद से सोती और दिन चढ़े उठती थी जब तक घर के कमाऊ मर्द काम पर जा चुके होते फिर देर तक वे बेषकीमती, लेकिन झल्लम–झल्ले किस्म के गाउन लपेटे एक विराट झालदार नाव की तरह मंजिल दर मंजिल तिरती घर की नाजुक चीज बरत के कोने अंतरों की साफ सफाई करती करातीं।

''अपनी गवाही'' की कथा में आंचलिकता
कृश्णा की मां में नारी सुलभ सभी विषेशताएं समाहित थी। वह भारतीय बडी–बूढ़ी स्त्रियों की भांति कथा वाचन में अत्यन्त रूचि रखती थी । यह इस उद्धरण से स्पश्ट हो जाता है–
जब वे सभी बच्चे थे तब कृश्णा की मां पार्वती उन्हें लगातार तरह तरह की कहानियां सुनाया करती थी। किस्से तो वह कुछ नसीहतें देने के लिए सुनाया करती थी। लेकिन इस चक्कर में अक्सर कहानी अन्त से ही षुरू करती थी । और कम्बख्त हितोपदेष जाने कहां खो जाता था। पार्वती के मायके के ही किसी आदमी ने जो सम्भवतः उसके पिता का कोई पुराना मरीज था, कृश्णा को बताया था कि नानाजी को हिन्दी से कितना अद्योशित लगाव था।
भारत में बाल विहाह की प्रथा का प्रचलन था। उन नाटकीय घटनाओं को याद करना जरूरी लगता होगा जो उसके बचपन को अविस्मरणीय बनाती थी । 16 वर्श की उम्र में ही विवाहित होकर उसे उन हिन्दुस्तानी अधिकारियों की देसी मेमों की हर बात पर सिर हिलाना और मुस्कुराते हुए अनगिनत पकवान बनाना – परोसना भी सीखना पड़ा था!

पटरंगपुर पुराण में विद्यमान आंचलिकता
मृणाल पाण्डे ने अपनी लेखिनी के माध्यम से परिनिश्ठित तथा परिमार्जित उपन्यासों की रचना की है। उन्होंने अपने उपन्यास पटरंगपुर पुराण में पटरंग पुर नाम के एक गांव का चित्र प्रस्तुत किया है। लेखिका ने अंग्रेजों के आगमन के साथ पटरंगपुर में हो रहे परिवर्तन, विकास को दर्षाते हुए एक अनूठे उपन्यास की रचना कर डाली हैं । विश्णुकुटी की आमा के द्वारा पटरंगपुर के कहानियों और किस्सों का वर्णन करते हुए यह उपन्यास अग्रसर होता है । यह उपन्यास अब तक लिखे गए आंचलिक उपन्यासों की श्रेणी में

सर्वोतम स्थान प्राप्त करने के योग्य है । इसकी कथा में ही मात्र आंचलिकता विद्यमान नहीं है अपितु इसकी भाशा षैली भी उस अंचल विषेश से पूर्णतः प्रभावित है । मिथ्या धारणाओं नवीन विचारों वहां के लोगों की समस्याओं को उजागर करता हुआ यह उपन्यास पूर्णतः आंचलिकता से आप्लबित है। पटरंगपुर की यह विषेशता है कि इसकी कथावस्तु में ही उच्चकोटि की आंचलिकता है । कथा का प्रारंभ ही उस विषिश्ट अंचल के प्राचीन नाम तथा उसके प्राकृतिक दृष्य के वर्णन के साथ होता है ।

सुना त्रेतायुग की बात है लंका में बड़ी घमसान लड़ाई मची ठहरी । चहुदिष मरामार हकाहाक हो रहा ठहरा । तभी राम चंद्र जी ने लंका–पति रावण के भाई कुभकरण की खोपड़ी ख्याह से काट के भन्न करके दे भनकाई इधर उत्तर दिषा की ओर तब कूर्म क्षेत्र नाम ठहरा इस जगह का । सख्त कछुए की पीठ जैसे पहाड़ ही पहाड़ हुए यहां चारों ओर । पानी–हानी, पेड़–हेड़ का नाम नहीं ठहरा । उजाड़ बियाबान ठहरा सारा इलाका ।

पटरंगपुर अंधविष्वासो का गढ़ था। यहाँ के लोगों में आनेक प्रकार के अन्धविष्वास विद्यमान थे । जिनके कुछ उदाहरण आगे दिए जा रहे है ।

हां वैसे मरने के टैम तो अपनी गोपुआ की इजा मां भी गजब बता देती है कभी । अम्मा के घर के बाहर अखरोट के पेड़ पर उल्लू को बोलता सुना उसने तो छत्त पर बड़ी डालते हुए जोर से वहीं से नीचे आंगन में कपड़े धो रही आमा की नतबहू हरमिन्दर को कह भी दिया कि इन जाड़ो में री चेली, मामा का बचना मुष्किल है ..... तो जिस बरस लछिमी पर देवी आई उसी बरस सुना पटरंगपुर में जाडों में विचित्र विचित्र बातें हुई । पहले तो सुना खुब अधंड तुफान आए फिर सुना सुबह से पानी की झडी लगी तो दोपहर तक मुठ्ठी बरोबर ओले गिरने लगे। वो भी सुना गुलाबी रंग के हुए जैसे फेरी वाला छडी बजा कर बुढ़िया के बाल की मिठाई है ना वैसे जैसे । बच्चे तो बच्चे ही हुए । सुना लछिमी की सास के दोनों छोटे बाहर आंगन में आकर उनमें खेलते रहे कुछेक खा भी गए सुना हो गया राम तक सांस उलटी चलने लगी, सुबह खेल खतम्म । दोनों के दोनों भाई पटापटी गए । बूढे बैध थे, सुना, एक हरबल्लभ षास्त्री करके उनको बुलाया पर उन्होंने भी जुवाब दे दिया । इश्ट–देवी का षाप ठहरा, मनुश्य का क्या बस चलता हो ।

गजब देखो जिस साल पटरंगपुर के बामणों के पंख कटे उसी साल सुना से जंगल कटने षुरू हुए देवरार गए बाज गए बुरूष गए जीड भी खत्म ही समझ लो कहां की पूजा? कहां के बणदेवताओं की आज्ञा ? जिसने चाहा काटा छांटा जलाया । पर ठीक जो क्या होता है । देवताओं के हिस्से की चीज बस्त देवताओं की उपेक्षा करने से ही षाप लगा पटरणपुरियों को इन्होंने उनके बन काटें उन्होंने दनाक्क गोरखाओं की कुमुक को भेज के खचा–चाची बामणों के पंख कटा दिए। कि लो पड़े रहो अब निस्तेज जटायु जैसे हो करके।

भारतीय समाज रीति रिवाजों को बखूबी निभाना जानता है। इन्हीं परम्पराओं से पटरंगपुर निवासी पूर्णतः प्रभावित थे।

पर हो उस साल गोपुआ की दुल्हैणी ने अपने बेटों राजीव और रवि के बात–पन्द में जो भोज दिया उससे षहर भर में दमादम धाक जम गई बिक्टोरिया काटेज बालों के आचार –नियमों के पालन की । दिनों पहले साफ कागज में हाथ का लिखा न्यौता लेकर हिरूली चौकीदारिन पटरंगपुर के घर–घर जा के दस्कत करा लाई थी। पूरे कर्म किए गोपाल डिप्टी कलट्टर ओर उसकी दुल्हैणी ने। सांस तब उसकी जिन्दा ठहरी ही । गृहजाग हुआ, लडकों के चुटिया भर बाकी छोड़ कर सिर मुडाए गए कान में सोने की बाली बाएं कन्धे पर जनेउ डाला गया । अंगरेजी स्कूल के पढ़े ठहरे तो क्या हुआ ? आहा जिस बखत कन्धे में दंड रख के बटु बन के औरतों के पास भिक्षा लेने को आए ठहरे सुना लगता था जैसे साच्छात राजा दषरथ के राम लक्ष्मण खड़े सामने करके । राजा के ही लड़के हुए । वैसे ही दिया भी । सबने । दर्जनों तो सुना सोने की अंगूठियां मिली, वैसे ही नकदी ।

संदर्भ ग्रन्थ

1. उपन्यासों की समकालीनता – मृणाल पाण्डेय –पृष्ठ 112
2. आदमी की निगाह में औरत – पृष्ठ 168 राजेन्द्र यादव
3. जहां औरतें गढ़ी जाती हैं–पृष्ठ 30